(गोरख पांडेय की कविता)

जानता हूं!

जानता हूं
बेमानी है इस वक़्त प्यार
जब हमें मौसम पिटे मुहरों–सा चल रहा हो
रफ़्ता–रफ़्ता हज़ारो स्रोतों से
खिंचा हुआ आदमी का ख़ून
हर क्षण कराहता–चीखता हमें पुकारता हुआ लगता है
मगर भाग्य–विधाता अधिनायक ने नसों में बूंद–बूंद ज़हर
उतार
एक समूची होनहार पीढ़ी को
बेकारी, अफीम और हस्तमैथुन के हवाले कर दिया है
अपने मकान की दीवारें जासूस हो गई हैं
हमारे ख़िलाफ़
छतों से लटका कर रस्सियां
गिरीश फलसफे के मूड में कहता है,
'भीख मांगने से अच्छा है पागल हो जाना
और सबसे बेहतर है, यार, खुदकुशी'

यूं सारा–का–सारा भिगमंगा देश
पागल होने और खुदकुशी करने के बीच
तंग गली से गुज़र रहा है।
हम सिर्फ़ नफ़रत करने के काबिल रह गए हैं
आपस में अथवा इन उल्टी बहती हुई
रक्तपाई हवाओं से नफ़रत
जहां पत्नियां बिस्तरों की ज़रूरत हैं
और प्रेमिकाएं आरामदेह बिस्तरों की तलाश
जहां मक्कार प्यार का हलफनामा लिखते हैं
हत्यारे बांटते हैं अहिंसा और सत्य के इश्तिहार।
पता नहीं कब लैला, शोहदों के ज़रिए
तुम्हें क़ब्र का रास्ता दिखा दे
मुस्कराहट का केंचुल फेंक
पता नहीं कब
सांप चुभो दे ज़हरीले दांत उसके मासूम जिस्म में

लुटेरों की दया
लुटे हुए समाज के प्यार में डूब कर
दान करती है
महलों की साजिश चलती है राष्ट्रप्रेम के नाम पर
ग़रीब झोंपड़ियों की भूख से
धुंआती आग़
पिता के लिपे–पुते आंगन से
दाल मंडी के सूजाक–भरे कमरों तक
घुल चुकी है रिश्तों की पर्त–दर–पर्त
बाज़ार की स्याह रोशनी
संसद भवन और बूचड़खानों में
समान ढंग से घूमती है
वह जादू की छड़ी
जो हर क़ानून से बड़ी है
भाग्य–विधाता अधिनायक की जय हो जय हो
चौतरफा घूमती वह जादू की छड़ी
बलि के बकड़ों को कसाई की जय बोलना सिखाती है
इन उलटा बहती हुई रक्तपायी हवाओं के विरुद्ध
अविराम लड़ाई में साथ–साथ होने
और एक–दूसरे के ज़ख्म पर पट्टियां बांधने के अलावा
जानता हूं, बेमानी है प्यार
जब हमें मौसम पिटे मुहरों–सा चल रहा हो!

पेज 1 का शेष भाग

अगर पवन बंसल गवाह बन सकता है तो अफ़जल गुरू क्यों नहीं ?

गुरू की फ़ांसी केवल उसके तथाकथित इकबालिया बयान पर आधारित थी, जबकि बंसल की आपराधिक भूमिका के लिये तमाम परिस्थितिजन्य साक्ष्य मौजूद हैं। पैसे मांगने के लिये बंसल का सरकारी फ़ोन इस्तेमाल हुआ; सौदा तय करने के लिये बंसल की सरकारी कोठी में वार्ता हुई; अभियुक्त कुमार ने बंसल से मुलाकात की और आश्वस्त होने के बाद ही घूस की पहली किश्त सिंगला को पहुंचाई गयी। सिंगला न केवल बंसल का चुनाव एजेंट रहता आया है, बल्कि उसके निर्वाचन क्षेत्र के संचालन का काम भी उसी के जिम्मे रहता है।

लेकिन जब सीबीआई ने जमीर ही बेच रखा है तो वह अपने आकाओं, कांग्रेसी लूटखोरों, के हितों को नज़र अंदाज कैसे कर पाती। सीबीआई के वर्तमान निदेशक रणजीत सिन्हा को लालू यादव के चारा घोटाला की तफ़तीश के दौरान बदनीयती के चलते बीच में ही हटाना पड़ा था। बिल्ली भागों छीका टूटा और लालू यादव की केन्द्र की कांग्रेस सरकार पर पकड़ का फ़ायदा उठा कर सिन्हा को सीबीआई की सत्ता मिल गयी। दो वर्ष में जब उनका कार्यकाल समाप्त हो जायेगा, तब भी वे रिटायर होना नहीं चाहेंगे। तरह-तरह की संवैधानिक कुर्सियां उन्हीं जैसे वफ़ादारों के लिये ही तो बनाई गयी हैं।

सिन्हा के पूर्ववर्ती एके सिंह को कोल-घोटाले में वफ़ादारी निभाने के फ़लस्वरूप संघ लोक सेवा आयोग की सदस्यता से नवाज़ा गया है। एक और पूर्ववर्ती अश्वनी कुमार को भी ऐसी ही विभिन्न वफ़ादारियों के लिये नागालैंड का राज्यपाल बनाया गया है। यह सिलसिला कोई आज का नहीं है। हरियाणा के बेबाक पुलिस अधिकारी बी आर लाल ने सीबीआई में बतौर संयुक्त निदेशक ऐसी वफ़ादारियों और ऐसे वफ़ादारों की 90 के दशक में पोल खोली थी। अवकाश प्राप्ति के बाद उन्होंने इस तरह के प्रकरणों पर बाकायदा एक चर्चित किताब भी लिखी। लाल को तत्कालीन प्रधानमंत्री देवगौड़ा के सामने भरी सभा में इस मुद्दे को उठाने का नतीजा भी भुगतना पड़ा। उनको तुरंत ही सीबीआई से विदा कर दिया गया था।

बंसल को बचाने के चक्कर में कांग्रेसियों ने भाजपाइयों को मोदी के पक्ष में तर्क भी प्रदान कर दिये हैं। अब वे आसानी से मांग कर सकते हैं कि गुजरात की झूठी मुठभेड़ों के मामले में मोदी को भी गवाह बनाया जाय न कि मुल्जिम।

रिश्वतखोरी में चीनी रेल मन्त्री को फ़ांसी, भारतीय को माफ़ी

वहीं दूसरी ओर किसी एक-आध रेलमंत्री को छोड़कर सभी ने इस पद पर रह कर भारी भरकम डकैतियां मारी हैं। और बंसल से पहले कोई पकड़ा भी नहीं जा सका। बंसल पकड़ा भी इसलिये जा सका क्योंकि वह बिल्कुल ही नंगा हो कर नाचने लगा था, रेलवे का हर छोटा-बड़ा कर्मचारी उसकी रिश्वतखोरी से न केवल वाकिफ़ था बल्कि तमाम स्रोत व दलालों को भी जनता पहचाना था। इसी के चलते पूरा रेल विभाग भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी में डूब चुका था। दूसरी ओर सीबीआई की ध्वस्त हो चुकी साख को फ़िर से कायम करने के लिये इसके प्रमुख रणजीत सिन्हा द्वारा यह नाटक खेला जाना तय था। नाटक प्रारम्भ होते ही यह समझ में आ रहा था कि इस केस में न तो रेलमंत्री बंसल को कोई सज़ा होनेवाली है न उसके रिश्तेदारों व एजेंटों को।

हां, यदि कांग्रेस की सत्ता ही पलट गयी और किसी ने यदि सही ढंग से तफ़तीश करा दी तो जरूर बंसल समेत सारे गिरोह को सज़ा हो सकती है। परन्तु इसकी सम्भावना न के बराबर है।

भारत और चीन की राजव्यवस्था में यही एक बड़ा अंतर है कि यहां पूरे का पूरा शासक वर्ग चोर है। पकड़े जाने या किसी की चोरी एवं घोटाला प्रकाशित होने पर सारा गिरोह एकजुट होकर उसे बचाने में जी-जान से जुट जाता है। जबकि चीन में इसके विपरीत चोरी पकड़े जाने पर कोई भी उसके साथ खड़ा होने की हिम्मत नहीं कर पाता।

यही कारण है कि भारत से 2 वर्ष पश्चात आज़ाद हुआ चीन आज हर क्षेत्र में भारत से कई गुणा आगे बढ कर विश्व की महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। अपनी इसी ताकत के बल पर वह आये दिन, जहां मौका मिले भारत की बांह मरोड़ता रहता है और भारत उसके सामने मिमयाने के अलावा कुछ भी कर पाने की स्थिति में नहीं है।

मोदी दोषी क्यों, मनमोहन क्यों नहीं ?

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री शिवराज पाटिल के पास इशरत जहां मामले की सूचना इसी रूप में भेजी गयी थी। पर अमित शाह और मोदी से तो राज्य पुलिस के अधिकारियों ने फ़र्जी मुठभेड़ करने की सीधी अनुमति प्राप्त की थी, लिहाजा मोदी और शाह हत्याओं के षड़यन्त्र में शामिल हैं, जबकि मनमोहन सिंह व पाटिल नहीं।

तो भी आईबी की अपनी अन्दरूनी प्रणाली की छानबीन की आवश्यकता तो है ही, ताकि यह जाना जा सके कि इस संगठन के वरिष्ठ अधिकारी भी ऐसी फ़र्जी मुठभेड़ों में सक्रिय हिस्सेदार कैसे बन जाते हैं। जरूरी है कि केन्द्रीय गृह मन्त्रालय तमाम ऐसे चोर-रास्तों को बन्द करने की पहल करे। भाजपाइयों एवं अन्य निहित स्वार्थों द्वारा सारे प्रकरण को आईबी बनाम सीबीआई के रूप में भी पेश किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि आईबी के अधिकारियों पर उंगली उठाने से संगठन की कार्यक्षमता पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। यह भी कहा जा रहा है कि इशरत जहां वगैरह आतंकवादी थे और यदि उन्हें मारने के लिये पुलिस वालों पर मुकदमे चलाये जायेंगे तो इससे आतंकवाद मजबूत होगा। ये सारे तर्क हास्यास्पद हैं। क्या राज्य के मुख्यमंत्री का राजनैतिक कद बढ़ाने के लिये फ़र्जी मुठभेड़ों की इजाजत दी जा सकती है ? क्या देश का कानून आतंकवादी तक को पकड़कर मारने की इजाजत देता है ?

भाजपा चाहती है कि इन आपराधिक मामलों का राजनीतिकरण हो जाये। पर लगता यही है कि कानून के लम्बे हाथ अमित शाह और नरेंद्र मोदी की गर्दनों की तरफ़ बढ़ रहे हैं।

सुजुकी मोटरसाइकिल के मज़दूरों ने लंच, बायकाट कर मैनेजमेण्ट की दी चुनौती

सुजुकी मोटरसाइकिल कम्पनी गुड़गांव के खेडकी दौला गांव के पास स्थित है। इस कम्पनी में मैनेजमेण्ट नें दो मज़दूरों को काम से बाहर निकाल दिया था। निकाले गये मज़दूर प्रदीप कुमार व अविनेश कुमार हैं। मज़दूरों को निकाले जाने के पीछे मज़दूर प्रदीप कुमार व सुपरवाइजर अंकुर गुप्ता के बीच कहा-सुनी होना बताया जा रहा है। जब प्रदीप कुमार ने अंकुर गुप्ता के साथ कहासुनी की बात युनियन के सामने रखी तो जनरल सेक्रेटरी अविनेश कुमार ने सुपरवाइजर से बातचीत की। परन्तु सुपरवाइजर अविनेश कुमार को भी भला-बुरा कहा और गाली-ग्लौज की। इस पर सुपरवाइजर व अविनेश कुमार में हाथापाई हो गयी। कम्पनी ने यूनियन पदाधिकारियों की बात न मानते हुए 12 फरवरी को मज़दूर प्रदीप कुमार व जनरल सेक्रेटरी अविनेश कुमार को निकाल दिया।

यूनियन प्रधान (अध्यक्ष) अनिल कुमार के मुताबिक उन्होंने मैनेजमेण्ट से बात की परन्तु मैनेजमेण्ट व्यवहार तानाशाही पूर्ण था। मैनेजमेण्ट ने एक और मज़दूर पर चोरी का इलजाम लगाकर कम्पनी से निकाल दिया था। उन्होंने तीनों मज़दूरों को वापस काम पर लेने की बात की लेकिन मैनेजमेण्ट ने मना कर दिया। मैनेजमेण्ट के इस तानाशाहीपूर्ण रवैये के ख़िलाफ़ मज़दूरों ने 26 अप्रैल से लंच का बायकाट (बहिष्कार)कर दिया। 28 दिन बीत जाने के बाद भी मैनेजमेण्ट द्वारा मज़दूरों को काम पर वापिस न लेने पर सुजुकी मोटरसाइकिल तथा कुछ अन्य फैक्टरियां के मज़दूर हड़ताल पर जा सकते हैं।

मज़दूर साथियों!

आज पूंजीपति, सरकार के साथ मिलकर मज़दूरों का शोषण/ दमन कर रहा है। जिसका मुकाबला हमें व्यापक तौर पर मज़दूरों की संगठित ताकत के बल पर देना होगा। मज़दूरों को समाज में चल रहे वर्ग संघर्ष (मज़दूर बनाम् पूंजीपति) को समझते हुए अपनी वर्गीय एकता कायम करनी होगी। समाजवाद के लिये लड़ाई को तेज करना होगा। जिसमें मज़दूरों की मुक्ति होनी है।

योगेश, गुड़गांव

मज़दूर मोर्चा

नियमित पढ़ने हेतु पाठकगण अपने हॉकर से संपर्क करें। जो हॉकर, आपके घरों में दैनिक अखबार डालते हैं, आपके आदेश पर मज़दूर मोर्चा भी डालेंगे। कोई दिक्कत हो तो दीक्षित न्यूज़ एजेंसी से 9811159238 पर संपर्क करें।

'मज़दूर मोर्चा' प्रिंटफोर्ट, नेहरू ग्राउंड पर भी उपलब्ध है।